HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-IV, (Effects Of The Mercantilism)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 84

वाणिज्यवाद के परिणाम

(EFFECTS OF THE MERCANTILISM)

पुनर्जागरण के बाद के यूरोप का वाणिज्यवाद एक आवश्यक परिणाम था। यह भौतिकवादी तथा धन प्राप्त करने की

आकांक्षा का स्वाभाविक परिणाम था। इसने नवीन राष्ट्रीय आधार पर तत्कालीन यूरोप के आर्थिक । जीवन को संगठित किया। औद्योगिक विकास और भौतिक प्रगति का मार्ग इसने प्रशस्त किया। राज्यों को इसने आर्थिक शक्ति प्रदान की। राजाओं की आय में वृद्धि हुई। उन्होंने विभिन्न प्रकार के कर लगाये। सार्वजनिक करों का विस्तार हुआ। राजाओं ने स्थायी सेना का निर्माण कर अपने सैनिकों को नकद वेतन देना आरम्भ किया। प्रशासन की प्रक्रिया जटिल हो गयी और राज्य के कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई जिन्हें नकद वेतन दिया जाता था। मुद्रा का प्रचलन व्यापारिक गतिविधियों के कारण बढ़ गया। व्यापारियों, उद्योगपतियों तथा पूँजीपतियों से राजाओं को करो के रूप में राजस्व प्राप्त होता था। इससे राज्य पर इन वर्गों का प्रभाव बढ़ा और वाणिज्यवादी नीति का राजाओं ने समर्थन किया।

यूरोपीय देशों को वाणिज्यवादी नीतियों ने समृद्ध बनाया। उत्पादन में वृद्धि हुई और कृषि का विस्तार हुआ। राज्यों की सैनिक शक्ति में वृद्धि हुई और उपनिवेशों की स्थापना हुई। इंग्लैण्ड, फ्रान्स शक्तिशाली राष्ट्र बने और उन्होंने विश्व के अधिकांश भाग पर व्यापारिक तथा औपनिवेशिक एकाधिकार स्थापित किये।

वाणिज्यवाद का हानिकारक पक्ष भी था। इससे विभिन्न क्षेत्रों के मध्य व्यापारिक स्पर्द्धा उत्पन्न हो गईं। इस कटुतापूर्ण स्पर्द्धा से अनेक युद्धों का जन्म हुआ। वाणिज्यवाद के अनुसार व्यापारिक लाभ प्राप्त करने के लिये उपनिवेश की स्थापना आवश्यक थी। अत: उपनिवेशों पर अधिकार करने के लिये भी देशों के मध्य अनेक बार युद्ध हुए। यूरोप के साथ एशिया और अमेरिका में भी युद्ध हुए। इस प्रकार वाणिज्यवाद से औपनिवेशिक युद्धों का जन्म हुआ।

अर्थशास्त्रियों ने वाणिज्यवाद के सिद्धांतों की आलोचना की। लाक का मत था कि व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में सरकारों का हस्तक्षेप समाप्त होना चाहिये और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के आधार पर इनका संचालन होना चाहिये। इंग्लैण्ड के अन्य अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' नामक पुस्तक में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया कि वास्तविक धन तो वस्तुओं का सस्ता तथा प्रचुर उत्पादन था। सोना और चांदी तो कवल वस्तुओं को प्राप्त करने के साधन थे। अत: उसने वाणिज्यवाद के इस सिद्धान्त को अस्वीकार कर दिया कि सोना और चाँदी धन होता था। उपयोगी वस्तुओं के उत्पादन पर उसने जोर दिया। वाणिज्यवाद के इस सिद्धान्त की भी आलोचना होने लगी कि अधिक से अधिक निर्यात करने तथा कम से कम आयात करने से राज्य धनी होता है। अगर देश इस नीति का पालन

करेंगे तो कोई भी देश आयात नहीं करना चाहेगा। दुसरे देश ऐसी स्थिति में किस प्रकार निर्यात करेंगे।

यूरोप के देशों में इस समय वाणिज्यवाद का विरोध व्यापारी भी कर रहे थे। वाणिज्यवाद के अंतर्गत सम्पन्न कम्पनियों के हाथ में व्यापार का एकाधिकार होता था व्यापार में सम्मिलित होकर अन्य व्यापारी भी लाभ प्राप्त करना चाहते थे लेकिन इसका एकाधिकार प्राप्त कंपनियां विरोध करती थी। अतः इन दशों में यह मांग प्रबल होने लगी कि व्यापार को उन्मुक्त कर दिया जाय और प्रत्येक व्यापारी को व्यापार करने की स्वतन्त्रता हो। स्वतन्त्र व्यापार का समर्थन एडम स्मिथ ने भी किया था। उनका कहना था कि स्वतन्त्र व्यापार जिसमें सरकार का कोई हस्तक्षेप न हो, सभी देशों के लिये लाभप्रद होगा। तत्कालीन यूरोप पर उसके विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा और 18 वीं शताब्दी के मध्य से वाणिज्यवाद का पतन हो गया।

धन्यवाद